Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 9 (2024) pp: 182-185
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

बी.एड द्विवर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेश कुमार गोलाडा
पी.एच.डी शोधार्थी
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर

डॉ. मीनाक्षी मिश्रा
प्राचार्य
भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान,
श्रीगंगानगर

सारांश :– प्रस्तुत शोध में बी.एड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है तथा न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के 12 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के कुल 600 प्रशिणार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया है। प्रदतों के संकलन हेतु शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण मापनी का प्रयोग किया गया है जिसका निर्माण – डॉ. एस.पी. आहलुवालिया द्वारा किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि जयपुर जिले के बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृति में सार्थक अंतर पाया गया।

Received 14 Sep., 2024; Revised 27 Sep., 2024; Accepted 30 Sep., 2024 © The author(s) 2024.
*Published with open access at **www.questjournas.org***

- **प्रस्तावना :–**शिक्षा के द्वारा ही हम अपना विकास सुव्यवस्थित रूप से कर सकते है। शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट करते हुए **डा. राधाकृष्णन** ने कहा है कि ''शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए। इस कार्य को किए बिना शिक्षा अपूर्ण है।'' इसके साथ ही शिक्षा को परिभाषित करते हुए प्रसिद्व शिक्षाविद् **जॉन ड्यूवी** ने भी कहा है कि ''शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास है जिनके द्वारा वह अपने वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त करता है तथा अपनी सम्भावनाओं को पूर्ण करता है।'' वर्तमान समय में शिक्षा मुख्यतः दो प्रकार से दी जा रही है प्रथम अनौपचारिक शिक्षा और दूसरी औपचारिक शिक्षा। अनौपचारिक शिक्षा आकस्मिक तथा स्वाभाविक होती है तथा ऐसी शिक्षा बिना किसी योजना तथा उद्देश्य के होती है। वही औपचारिक शिक्षा का जन्म अनौपचारिक शिक्षा की अपूर्णता को पूर्ण करने के लिए हुआ है। वर्तमान समय में औपचारिक शिक्षा विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों आदि में प्रदान की जा रही हैं। औपचारिक शिक्षा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उस संस्थान के पास कितने संसाधन उपलब्ध हैं जिस संस्थान के पास जितने अधिक संसाधन उपलब्ध होगें, उसकी सफलता का प्रतिशत उतना ही बढता चला जायेगा। प्रत्येक विद्यालय के पास मुख्यतः दो प्रकार के संसाधन होते है। 1. भौतिक संसाधन 2. मानविय संसाधन। भौतिक संसाधनों में विद्यालय का भवन, भूमि, फर्निचर आदि शामिल हैं तथा मानवीय संसाधनों में प्रधानाध्यापक, शिक्षक तथा अन्य कर्मचारी शामिल है। इन मानविय संसाधनों में भी शिक्षक का प्रमुख स्थान होता हैं जिसके संबंध में प्राचीन समय की मान्यता थी कि शिक्षक जन्मजात होते है, अर्थात् अध्यापक बनने वाला व्यक्ति जन्म से ही अध्यापन सम्बन्धी प्रतिभा से सम्पन्न होता है। इसे किसी भी प्रकार के औपचारिक अथवा अनौपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता नही होती है। परन्तु आज यह स्वीकृत मान्यता है कि शिक्षक निर्मित किए जाते हैं तथा प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक के उन गुणों का विकास करने के लिए वर्तमान में कई प्रकार के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जैसे बी. एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, डी.एल.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम तथा चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम ऐसे प्रमुख पाठ्यक्रम हैं जिनमें प्रशिक्षण प्रदान करके ऐसे शिक्षको का निर्माण किया जा रहा है जिनमें विषयवस्तु के ज्ञान के साथ–साथ शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति को विकसित किया जा रहा हैं अतः शोधकर्त्ता ने बी.एड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने का निश्चय किया है।
- **समस्या कथन :–** ''बी.एड द्विवर्षीय एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियो की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''
- **अध्ययन के उद्देश्य :–**

1. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.– बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- **परिकल्पनाएं :–**

1. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

2. बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

3. बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

- **अध्ययन विधि :–**प्रस्तुत शोध कार्य में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, क्योंकि यह वैज्ञानिक विधि होने के साथ–साथ इस विधि से किया गया दत्त कार्य वैध तथा विश्वसनीय होता है।

- **न्यादर्श :–**प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान के लिए जनसंख्या विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थी है, जिनकी संख्या बहुत अधिक होने के कारण सम्पूर्ण जनसंख्या पर शोध कार्य करना सम्भव नहीं हैं। अतः अध्ययन में धन, समय व साधनों की सीमित मात्रा के कारण शोधकर्त्ता ने अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के कुल 12 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 600 प्रशिक्षणार्थियों का, जिसमें 200 बी.एड. द्विवर्षीय, 200 बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय तथा 200 बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणाथियों का चयन यादृशिक विधि से किया गया है।

- **शोध उपकरण :–**प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी ने प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति परीक्षण जॉचने हेतु डॉ. एस. पी. आहलुवालिया द्वारा निर्मित मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया हैं।

- **शोध सॉख्यिकी :–** उक्त शोध कार्य में ऑकडों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात तथा एनोवा का प्रयोग किया गया हैं।

- **विश्लेषण व व्याख्या :–**

परिकल्पना–1

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

तालिका संख्या – 1

प्रशिक्षणार्थी	प्रतिदर्श	माध्य	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
					0-05	0-01
बी.एड. पाठ्यक्रम प्रशिक्षणार्थी	200	249.50	15.62	14.90		
एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी	400	222.24	15.56		अस्वीकृत	अस्वीकृत

($df=N_1+N_2-2=200+400-2=598$)

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि बी.एड. के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 249.50 व एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 222.24 तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 15.62 व 15.56 प्राप्त हुए हैं। इसके आधार पर इनका क्रांतिक मान ज्ञात करने पर यह 14.90 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के विश्वास स्तर 0.05 तथा 0.01 से बहुत अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् कहा जा सकता हैं कि बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम एवं चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना–2

बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

तालिका संख्या – 2

प्रशिक्षणार्थी	प्रतिदर्श	माध्य	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर	
बी.ए.–बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी	200	223.81	16.87	2.02	0-05	0-01
बी.एससी.–बी.एड. पाठयक्रम के प्रशिक्षणार्थी	200	220.68	14.01		अस्वीकृत	LohÑr

(df=N_1+N_2-2=200+200-2=398)

उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 223.81 व बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों का मध्यमान 220.68 तथा मानक विचलन क्रमशः 16.87 व 14.01 हैं। इसके आधार पर इनका क्रांतिक मूल्य ज्ञात करने पर यह 2.02 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 398 के विश्वास के स्तर 0.05 पर प्राप्त मान 1. 97 से अधिक तथा विश्वास के स्तर 0.01 पर प्राप्त मान 2.59 से कम है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना सार्थकता के स्तर 0.05 पर अस्वीकृत तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर स्वीकृत हो जाती है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में आंशिक अंतर पाया गया है।

परिकल्पना–3

बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं हैं।

प्रसरण स्रोत (Source of Variation)	वर्ग योग (sum of square)	स्वातन्त्रय संख्या (d.f)	प्रसरण (Mean sum of square)	प्रसरण अनुपात (f)	सार्थकता स्तर (0.05) व (0.01)
Between Groups	SSB 100045.7	K-1 3-1=2	MSB $\frac{100045.7}{2}$ =50022.85	f= $\frac{MSB}{MSW}$ f= 207.8	अस्वीकृत
Within Groups	SSW 144200.7	N-K 599-2=597	MSW $\frac{144200.7}{599}$ =240.73		
Total	TSS 244246.3	N-1 600–1=599			

उपरोक्त परिकल्पना में बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति सम्बन्धी योग्यता के आंकड़ों को विश्लेषित किया गया है, जिसमें 200 बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी, 200 बी.ए.–बी.एड. एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी तथा 200 बी.एससी.–बी.एड. पाठ्यक्रम से सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित किया गया, जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के तीनो पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थियों का एफ मूल्य 207. 8 प्राप्त हुआ जो कि एफ मूल्य की तालिका स्तर 0.05 तथा 0.01 के मान से बहुत अधिक है। इससे स्पष्ट है कि तीनों समूहों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवत्ति में सार्थक अन्तर है। अतः शोधकर्त्ता द्वारा निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है अर्थात् बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम, बी.ए.

–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम एवं बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

- **अध्ययन के निष्कर्षः–**बी.एड. द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थी चार वर्षीय पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों से आयु एवं अनुभव में अधिक परिपक्व होने के कारण उनमें शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति भी अधिक पाई जाती हैं जिसके कारण दोनों समूहों के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया हैं। लेकिन जब बी.ए.–बी.एड. तथा बी.एससी.–बी.एड. चार वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम के प्रशिक्षणार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन किया गया तो पाया गया कि दोनो समूहों की समान आयु एवं अनुभव होने के कारण दोनों की शिक्षण अभिवृत्ति में आंशिक अंतर ही पाया गया है।
- **तकनीकी शब्द :–** शिक्षण अभिवृत्ति, शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम, एकीकृत पाठ्यक्रम।
- **शैक्षिक निहितार्थ :–**

1. प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्षों के आधार पर izf'k{k.kkFkhZ अनुशासन व शैक्षिक अभिवृत्ति में सुधार करने हेतु पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग ले सकेगें।

2. माता और पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति के गुणों का विकास करे जिससे वे भविष्य में अच्छे शिक्षक बनकर देश के निर्माण में अपना योगदान दे सके।

3. जिन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में शैक्षिक अभिवृत्ति का स्तर कम पाया गया है उनके लिए विशेष प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करके उनमें शिक्षण प्रति दृष्टिकोण का विकास किया जा सके।

- **भावी शोध हेतु सुझाव :–**

1. प्रस्तुत शोध में सह–शिक्षा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरूष व महिला प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है। आगामी शोध एकल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के केवल पुरूष अथवा महिला प्रशिक्षणार्थियों पर भी किया जा सकता है।

2. सामान्य तथा आरक्षित वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. भावी शोध हेतु शिक्षा–महाविद्यालयों का वातावरण तथा पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव विषय पर शोध किया जा सकता है।

4. अनाथालय व पारिवारिक वातावरण में रहने वाले विद्यार्थियों पर शोध किया सकता है।

- **सन्दर्भ सूची :–**

1. डॉ. अस्थाना विपिन, डॉ. विजय श्रीवास्तव शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी।
2. सक्सेना मिश्रा, एन.आर. फण्डामेंटल ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च आर.लाल बुक डिपो मेरठ
3. गुप्ता आर.बी. भट्ट शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन लक्ष्मीनारायण अग्रवाल पुस्तक प्रकाशन आगरा।
4. कुलश्रेष्ठा जर्नल ऑफ एज्यूकेशन अप्रैल 2005।
5. गुप्ता विक्रम जर्नल ऑफ एज्यूकेशन अप्रैल 2006।

English Dictionary

1. Biswash. A and Aggarwal J.C. 1987 – Dictionary as dictionary of education the academic publication New delhi.
2. Good C.V. (1986) Dictionary of Education MC Grow Hill book compnay, Inc. New York and Landon.